



# एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 06, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2026)

[www.agriarticles.com](http://www.agriarticles.com) पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

## कृषि ऋण, जोखिम एवं पुनर्भुगतान व्यवहार

डॉ. हरकेश कुमार बलाई<sup>1</sup> एवं \*केशर कुमारी<sup>2</sup>

<sup>1</sup>असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर

<sup>2</sup>स्टूडेंट बी.एससी. (ऑनर्स) एग्रीकल्चर, फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर

\*संवादी लेखक का ईमेल पता: [kesharchoudhary8863@gmail.com](mailto:kesharchoudhary8863@gmail.com)

**भा**रत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर करती है। कृषि उत्पादन को बढ़ाने तथा आधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए किसानों को धन की आवश्यकता होती है, जिसे कृषि ऋण कहा जाता है। परंतु कृषि कार्य अनेक प्रकार के जोखिमों से प्रभावित होता है, जिससे किसानों की आय और उनके ऋण चुकाने के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।

### कृषि ऋण

कृषि ऋण वह धनराशि है जो किसानों को खेती से संबंधित कार्यों के लिए प्रदान की जाती है। इसके दो प्रमुख प्रकार हैं:

अल्पकालीन ऋण – बीज, खाद, मजदूरी आदि के लिए, जिसे एक फसल अवधि में चुकाना होता है।

दीर्घकालीन ऋण – कृषि यंत्र, सिंचाई साधन आदि के लिए, जिसे लंबे समय में चुकाया जाता है।

कृषि ऋण के प्रमुख स्रोत:

सहकारी बैंक, वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा सूक्ष्म वित्त संस्थाएँ।

### कृषि में जोखिम

कृषि एक अनिश्चित कार्य है, जिसमें कई प्रकार के जोखिम होते हैं:

उत्पादन जोखिम – सूखा, बाढ़, कीट एवं रोग के कारण फसल का नुकसान

बाजार जोखिम – फसलों के मूल्य में उतार-चढ़ाव

वित्तीय जोखिम – ऋण का बढ़ता बोझ और ब्याज दर

व्यक्तिगत जोखिम – किसान की बीमारी या श्रमिकों की कमी

ये सभी जोखिम किसानों की आय को प्रभावित करते हैं।

### पुनर्भुगतान व्यवहार

पुनर्भुगतान व्यवहार से आशय है कि किसान अपने ऋण को किस प्रकार और कितने समय में चुकाते हैं। यह कई बातों पर निर्भर करता है:

आय और उत्पादन स्तर – अच्छी पैदावार होने पर भुगतान आसान होता है।

ऋण का सही उपयोग – यदि ऋण का उपयोग खेती में किया जाए तो लाभ होता है।

ब्याज दर – अधिक ब्याज होने पर किसानों पर बोझ बढ़ता है।

सरकारी नीतियाँ – ऋण माफी और सब्सिडी का प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा एवं जागरूकता – शिक्षित किसान बेहतर निर्णय लेते हैं।

**कृषि ऋण और जोखिम का संबंध**

कृषि ऋण और जोखिम एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जब जोखिम अधिक होता है, तो किसानों की आय कम हो जाती है, जिससे वे समय पर ऋण नहीं चुका पाते। उदाहरण के लिए, यदि सूखा पड़ता है या फसल खराब हो जाती है, तो किसान को नुकसान होता है और वह ऋण चुकाने में कठिनाई महसूस करता है। इसी प्रकार, बाजार में कीमत कम होने पर भी आय घट जाती है।

इस कारण ऋण देने वाली संस्थाएँ किसानों की स्थिति और जोखिम का मूल्यांकन करती हैं।

**समाधान**

फसल बीमा की व्यवस्था – प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा के लिए

कम ब्याज दर पर ऋण – किसानों का बोझ कम करने के लिए

वित्तीय साक्षरता – सही उपयोग और प्रबंधन के लिए

फसल विविधीकरण – जोखिम कम करने के लिए

समय पर ऋण उपलब्धता – बेहतर उत्पादन के लिए

**निष्कर्ष**

कृषि ऋण किसानों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है, परंतु इसके साथ जुड़े जोखिमों को समझना भी जरूरी है। जोखिम के कारण किसानों की ऋण चुकाने की क्षमता प्रभावित होती है। यदि उचित नीतियाँ, बीमा और जागरूकता को बढ़ावा दिया जाए, तो किसान समय पर ऋण चुका सकते हैं और कृषि क्षेत्र का सतत विकास संभव है।

**संदर्भ**

1. नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) की रिपोर्टें
2. भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा कृषि ऋण संबंधी दिशानिर्देश
3. भारत सरकार, कृषि मंत्रालय की रिपोर्टें
4. कौर, जे. (2018) – कृषि वित्त एवं ऋण प्रणाली
5. शर्मा, पी. (2017) – कृषि में जोखिम प्रबंधन